मासिक पत्रिका सितम्बर 2023

"सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिए।"-महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश -1 (पंजी.)

ARYA SAMAJ KAILASH-GREATER KAILASH-I (Regd.) Regn. No. 3594/1968

Maharishi Dayanand Saraswati Marg, B-31/C, Kailash Colony, New Delhi-110048

Tel.: 46678389, 9310140742 • E-mail: samajarya@yahoo.in • Web.: www.aryasamajgk1.in

An ISO 9001:2015 Certified Institution

विजय लखनपाल	राजेन्द्र कुमार वर्मा	आर्य नरेन्द्र वाधवा
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष

आर्यसमाज की दृष्टि में योगेश्वर कृष्ण

-कन्हैयालाल आर्य

साभार: परोपकारी- सितम्बर 2018 (द्वितीय)

श्रीकृष्ण जी के सम्बन्ध में आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में लिखते हैं-

"श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्तपुरुषों के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण, श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरणर्यन्त, बुरा काम, कुछ भी किया हो, ऐसा नहीं लिखा।"

उनका वास्तविक जीवन और चरित्र महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित ग्रन्थ महाभारत में मिलता है, जहाँ उन्हें अत्यन्त पवित्र, धर्मात्मा, योगीराज, नीतिनिपुण, राष्ट्रनायक, अत्यन्त विनम्र, शास्त्रज्ञ, सर्वप्रिय, निर्भीक वक्ता आदि विशेषणों से विभूषित किया गया है।

श्रीकृष्ण जी भारतीय संस्कृति में कर्म की प्रधानता का उपदेश देने वाले, कर्म के मूर्त्तरूप थे। न केवल भारतवर्ष बल्कि विश्व को कर्म का सन्देश देने वाले और गीता का ज्ञान देने वाले योगेश्वर श्रीकृष्ण जी करोड़ों की आस्था के प्रतीक हैं। श्रीकृष्ण जी की पहचान मात्र गीता या महाभारत से नहीं है बल्कि सारा युग ही उनका था। जब तक वे रहे, अन्याय, अत्याचार, हिंसा, द्वेष, पाखण्ड, अन्धविश्वास और अनाचार के पाँव जमने नहीं दिये। वैदिक विद्वानों ने सदैव महाभारत के आधार पर श्रीकृष्ण के यथार्थ चरित्र को चित्रित किया है जो अत्युत्तम है।

आज भी हमारे समाज का एक बहुत बड़ा भाग श्रीकृष्ण जी को ईश्वर का अवतार मानता है, परन्तु ऐसा नहीं है। वे न तो ईश्वर थे और न ही ईश्वर के अवतार थे। यदि वे ईश्वर होते तो परमात्मा को आत्मा से भिन्न न मानते। गीता में १३वें अध्याय के १२वें श्लोक में उन्होंने स्वयं कहा है-

ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वामृतमश्नुते।
अनादि मत्परं ब्रह्म न सत्तन्नासदुच्यते॥

अर्थात् परमात्मा ओ३म् ही आत्मा के द्वारा जानने योग्य है। उसी को जानकर आत्मा अमृतरस का पान करता है।

गीता में स्वयं श्रीकृष्ण जी ने अर्जुन को उपदेश करते हुए परमात्मा के अस्तित्व को दर्शाया है। परमात्मा के अस्तित्व को मानने वाला बताइये स्वयं कैसे परमात्मा हो सकता है? कदापि नहीं हो सकता। गीता का अन्तिम श्लोक सारी गीता का निष्कर्ष है। यह श्लोक श्रीकृष्ण जी को ईश्वर का अवतार न मानकर एक महान् पुरुष ही सिद्ध करता है-

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिमर्म॥ (गीता १८/७८)

इस श्लोक में सञ्जय धृतराष्ट्र को कहता है, "हे राजन्! जहाँ योगेश्वर श्रीकृष्ण हैं और गाण्डीवधारी अर्जुन है वहीं पर श्री, विजय, विभूति और अचल नीति है। ऐसा मेरा मत है।" सञ्जय के कथन अनुसार यह सिद्ध होता है श्रीकृष्ण और अर्जुन साथ-साथ जिस युद्ध में लड़ेंगे उसमे विजय मिलनी निश्चित है। अर्जुन जहाँ बहुत बलशाली, पराक्रमी व धनुर्विद्या में अतिनिपुण क्षत्रिय था तो वहीं श्रीकृष्ण जी एक अति बुद्धिमान्, राजनीतिज्ञ, धैर्यवान्, विद्वान् तथा दूरदर्शी क्षत्रिय थे। अर्जुन यदि मानव थे तो श्रीकृष्ण महामानव थे।

आर्यसमाज श्रीकृष्ण जी के महाभारत में वर्णित स्वरूप को मानता है। आर्यसमाज के कृष्ण सर्वगुण सम्पन्न, महान् योगीराज, वेद-वेदांग-स्मृति आदि के ज्ञाता, न्यायशास्त्र व राजनीति में पारंगत, आदर्श राजनीतिज्ञ, कूटनीतिज्ञ, नीतिनिपुण, राष्ट्रनायक, सदाचारी, न्यायकारी, परोपकारी, सद्गृहस्थी, त्यागी, तपस्वी तथा उच्चकोटि के संयमी है।

पुराणपन्थी उनके चित्र की पूजा करके, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के दिन रासलीलायें करके, मन्दिरों में उनसे सम्बन्धित सुन्दर-सुन्दर झाँकियाँ सजाकर, व्रत रखकर अपने कर्त्तव्य की इति श्री समझ लेते हैं, परन्तु आर्यसमाज उनके चित्र की पूजा न करके उनके चरित्र की पूजा करता है। आर्यसमाज उनको एक महापुरुष मानकर उनके जीवन के गुणों को अपनाने की शिक्षा देता है।

सारे विश्व में अनेक महापुरुष हुए हैं और भविष्य में भी होते रहेंगे। सभी महापुरुषों में अपनी-अपनी विशेषतायें थीं जिसके कारण उन्हें स्मरण किया जाता है, परन्तु श्रीकृष्ण जी वास्तव में अप्रतिम हैं, अनुपम हैं, उनकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती। उनके चरित्र के मुख्य गुण निम्नलिखित हैं-

१. योगेश्वर श्रीकृष्ण - स्वयं श्रीकृष्ण जी ने अर्जुन को उपदेश देते हुए गीता के दूसरे अध्याय के ४८वें श्लोक में योग का अर्थ बताया है-

"समत्वं योग उच्यते" इस उक्ति के अनुसार श्रीकृष्ण जी योगी ही नहीं समदर्शी भी थे।

२. कर्मकुशलता - योगीराज श्रीकृष्ण जी गीता २/५० में कहते हैं-

"योगः कर्मसु कौशलम्" किसी भी कार्य को कुशलतापूर्वक, दत्तचित्त होकर करना ही योग है। श्रीकृष्ण जी कर्म को ही विशेष समझते थे तभी तो अर्जुन को कहते हैं-कर्म करना तुम्हारा कर्त्तव्य है, फल की चिन्ता मत करो।

३. विनम्रता - युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में सभी ने अपने -अपने कार्य बाँट लिये, परन्तु श्रीकृष्ण जी ने देखा कि उन्हें कार्य सौंपे जाने के विषय में सब असमंजस में है तो उन्होंने नम्रतापूर्वक निवेदन किया, "मुझे सेवा का कार्य सौंपा जाये, मैं सब अतिथियों के चरण धोऊँगा।"

४. शालीनता और शिष्टता - श्रीकृष्ण जी महान् राजा होते हुए भी जब भी श्री व्यास जी, धृतराष्ट्र, कुन्ती, युधिष्ठिर, भीष्म पितामह, विदुर आदि से मिलते तो उनके चरण-स्पर्श करना न भूलते थे।

५. न्यायप्रिय - चाहे कौरव अत्याधिक शक्तिशाली थे, परन्तु अन्यायकारी कौरवों का साथ न देकर न्याय पर चलने वाले धर्मात्मा पाण्डवों का साथ दिया।

६. वीर, स्वाभिमानी, निर्भीक - शान्ति प्रस्ताव प्रस्तुत करने वाले श्रीकृष्ण जी को दुर्योधन अपमानित करने का प्रयास करता है, वे दुर्योधन को फटकारते हुए उसके भोजन के निमन्त्रण को अस्वीकार करते हैं। स्वयं को कैद करने का प्रयास करने पर श्रीकृष्ण धृतराष्ट्र को ललकारते हैं और अपने वीर, स्वाभिमानी एवं निर्भीक होने का परिचय देते हैं।

७. निर्लोभी - कंस का वध किया, परन्तु राज्य अपने नाना उग्रसेन को दे दिया। जरासन्ध का वध करके मगध का राज्य उसके पुत्र सहदेव को दे दिया। महाभारत का युद्ध जीतकर हस्तिनापुर का राज्य युधिष्ठिर को दे दिया। उन्होंने लोभरहित होकर अन्याय-अत्याचार को समाप्त किया।

८. कुशल नीतिनिपुण - उन्होंने सज्जनों के साथ शिष्टाचार और दुष्टों के साथ 'शठे शाठ्यम् समाचरेत्' की भावना को न्याय संगत माना।

९. यज्ञप्रिय - गीता ३/१३ में कहा है-सर्वदा सुख चाहने वाले को सदा श्रेष्ठ कर्मों में संलग्न रहना चाहिये। यज्ञ एक श्रेष्ठतम कर्म है। जो यज्ञ के पश्चात् खाता है (यज्ञशेष) अर्थात् अमृत खाता हुआ सब दुःखों से मुक्त हो जाता है।

१०. ओ३म् ही ईश्वर का मुख्य नाम है ऐसा मानना - गीता ८/१४-१५ में कहा है-इसी मेरे प्यारे इष्ट 'ओ३म्' को जो भक्त नित्य नियम से जपता है, वह बार-बार के जन्म तथा मृत्यु के दुःख से बचकर परमगति (मोक्ष) को प्राप्त करता है।

११. आदर्श मित्र - मित्रता निभाना कोई भी श्रीकृष्ण जी से सीखे। मित्र चाहे निर्धन ही क्यों न हो। सुदामा के आने पर उसका न केवल स्वागत किया अपितु उसका धन-धान्य से सम्पन्न कर दिया।

१२. ईश्वरभक्त - प्रतिदिन दोनों समय बड़ी श्रद्धा और निष्ठा से सन्ध्या किया करते थे। यहाँ तक कि दूत के रूप में जब श्रीकृष्ण जी हस्तिनापुर जा रहे थे तो रास्ते में सायंकाल के समय रथ रोककर सन्ध्या की, यह महाभारत में आता है।

अवतीर्य रथात् तूर्णां कृत्वा शौचं यथाविधि।
रथमोचनमादिश्य सन्ध्यामुपविवेश सः॥

१३. नारी सम्मान की रक्षा प्रथम कर्त्तव्य आदि - महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सदैव महापुरुषों के निर्मल एवं उज्ज्वल जीवन-चरित्र को संसारके सामने रखा है। महर्षि का यह गुण हमें विरासत में मिला है। अतः हम श्रीकृष्ण जी के वास्तवरिक स्वरूप को समझें। जिस प्रकार श्रीकृष्ण जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन सत्य, धर्म और न्याय की स्थापना में व्यतीत कर दिया, उसी प्रकार हम भी अपने चारों ओर फैले हुए अज्ञान, अभाव, अन्याय, अधर्म, आतंकवाद, भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए श्रीकृष्ण जो के गुणों और नीतियों को जीवन में धारण करके वैसा ही आचरण करें, तभी हमारा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व मनाना सार्थक होगा। ■■

सितम्बर 2023 मास में साप्ताहिक सत्संग

दिनांक	वक्ता	विषय
03	**मुख्य समारोह - वेद प्रचार सप्ताह एवं श्रावणी पर्व**	
10	आचार्य आशीष दर्शनाचार्य	कैसे वैदिक बुद्धिमत्ता हमारे दैनिक जीवन में सहायक सिद्ध होती है।
17	डॉ. उमा आर्य (8882387821)	महर्षि दयानन्द की उपलब्धियाँ
24	श्री विनय आर्य, महामंत्री, दि.आ.प्र.स.	स्वामी दयानंद सरस्वती जी की शिक्षायें-आज के सामाजिक संघर्ष में उनकी प्रासंगिकता

बृजमोहन मुंजाल वैदिक केन्द्र एवं महाशय धर्मपाल (MDH) अन्तर्राष्ट्रीय सदन का उद्घाटन

आर्य समाज के प्रांगण में बने नवनिर्मित बृजमोहन मुंजाल वैदिक केन्द्र एवं महाशय धर्मपाल MDH अन्तर्राष्ट्रीय सदन का उद्घाटन रविवार, 27 अगस्त, 2023 को भव्य प्रकार से सम्पन्न हुआ। उद्घाटन समारोह प्रख्यात वैदिक विद्वान डॉ. वागीश आचार्य, डॉ. महेश विद्यालंकार तथा आचार्य अखिलेश्वर जी और मुंजाल परिवार एवं गुलाटी (MDH) परिवार की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ।

सर्वप्रथम मुंजाल परिवार और गुलाटी परिवार के सदस्यों ने रिबन खोलकर और दीप जलाकर कार्यक्रम का आरंभ किया। श्री विजय लखनपाल, प्रधान ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। तत्पश्चात् डॉ. वागीश आचार्य जी, डॉ. महेश विद्यालंकर जी, आचार्य अखिलेश्वर जी, श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी और श्री विनय आर्य जी का पीतवस्त्र द्वारा स्वागत किया गया। श्री राजेंद्र वर्मा, मंत्री ने उपरोक्त सभी सम्मानित अतिथियों का संक्षिप्त परिचय दिया। इसके पश्चात श्रीमती रेणु मुंजाल, श्रीमती गीता आनंद, श्री सुमन कांत मुंजाल, डॉ. पवन मुंजाल श्री सुनील कांत मुंजाल, महाशय राजीव गुलाटी और श्रीमती ज्योति गुलाटी का पीतवस्त्र द्वारा स्वागत किया गया। तत्पश्चात डॉ. सुकृति माथुर के दो भजन हुए। इसके बाद डॉ. बृजमोहन मुंजाल (बाउजी) जी के जीवन पर एक फिल्म दिखाई गई। तत्पश्चात श्री धर्मपाल गुलाटी (महाशय) जी के जीवन पर भी एक फिल्म दिखाई गई।

इसके बाद श्री गुनमीत सिंह चौहान इस प्रोजेक्ट के मुख्य आर्किटेक्ट, श्री नवीन जेटली-स्ट्रक्चरल कंसलटेंट तथा श्री मनु शर्मा का परिचय दिया गया तथा उनका भी पीतवस्त्र द्वारा स्वागत किया गया। डॉ. वागीश आचार्य जी का संबोधन हुआ इसके पश्चात डॉ. महेश विद्यालंकर जी और आचार्य अखिलेशवर जी के संबोधन हुए। तत्पश्चात् श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी ने संक्षिप्त संबोधन किया। मुंजाल परिवार की ओर से श्री योगेश मुंजाल और श्री सुनील कांत मुंजाल जी के संबोधन हुए। इसके पश्चात गुलाटी परिवार की ओर से महाशय राजीव गुलाटी जी का संबोधन हुआ।

तत्पश्चात् श्री विनय आर्य, महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा और श्री गुनमीत सिंह चौहान जी के संबोधन हुए। कार्यक्रम में श्रीमती शिखा राय, क्षेत्र की निगम पार्षद, श्री धर्मपाल आर्य, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिदिन सभा तथा क्षेत्र के अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने उपस्थित रहकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इस कार्यक्रम में लगभग 450 से 500 व्यक्ति उपस्थित रहे। अन्त में सभी का धन्यवाद श्री राजीव भटनागर, उपप्रधान ने किया। मंच का संचालन श्री राजेन्द्र वर्मा, मंत्री ने किया।

कार्यक्रम के अंत में सभी अतिथियों के लिए विशेष अल्पाहार (High Tea) का प्रबंध किया गया।

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-1
का उद्घाटन

बृजमोहन मुंजाल वैदिक केन्द्र
का उद्घाटन

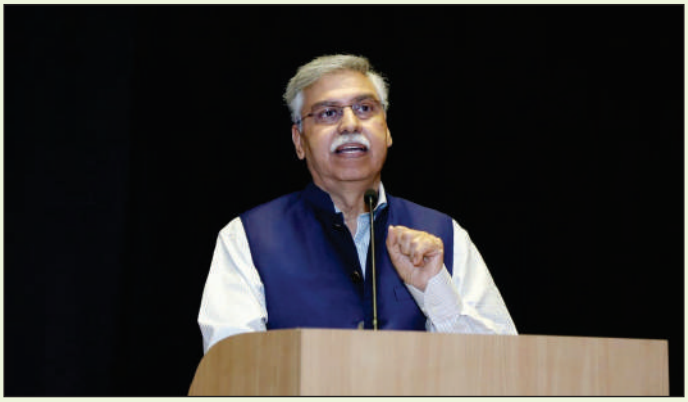

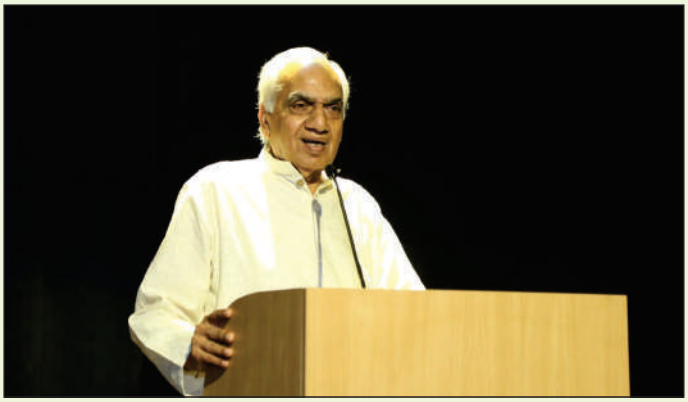

Bharat

नमस्ते

DONORS

वेद प्रचार सप्ताह व श्रावणी पर्व

वेद प्रचार सप्ताह व श्रावणी पर्व – दिनांक **28 अगस्त 2023 से 03 सितम्बर 2023** तक आर्य समाज कैलाश–ग्रेटर कैलाश–1 के प्रांगण में प्रत्येक वर्ष की भांति बहुत हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन उच्चकोटि के विद्वान आचार्य राजू वैज्ञानिक जी के प्रवचन हुए। पंडित राजेश अमर प्रेमी एवं श्री अंकित उपाध्याय के मधुर भजनों का सबने आनन्द लिया।

प्रतिदिन यज्ञ प्रात: 7:30 से 8:30 बजे तक होता था। संचालन आचार्य वीरेन्द्र विक्रम जी करते थे और आचार्य राजू वैज्ञानिक जी द्वारा प्रवचन होता था।

सायंकाल का कार्यक्रम 6.30 बजे से 7.30 बजे तक भजन और फिर 7.30 से 8.30 बजे तक आचार्य राजू वैज्ञानिक जी का प्रवचन 'गीता में मानव निर्माण के दिव्य सूत्र' विषय पर होता था।

पूर्णाहुति और मुख्य समारोह – रविवार, 03 सितम्बर 2023 को प्रात: 8:00 बजे यज्ञ से प्रारम्भ हुआ, तत्पश्चात् अतिथियों ने श्री अंकित उपाध्याय के मधुर भजन का आनन्द उठाया। आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी का प्रवचन हुआ। तत्पश्चात् आचार्य वीरेन्द्र विक्रम जी का प्रवचन हुआ।

अभिनन्दन पत्र – श्री राम कृष्ण तनेजा, पूर्व प्रधान, आर्य समाज कैलाश–ग्रेटर कैलाश–1 जी को अभिनन्दन पत्र से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में श्रीमती रेणु मुंजाल, संरक्षक, आर्य समाज कैलाश–ग्रेटर कैलाश–1, मुख्य अतिथि के रूप श्रीमती शिखा राय, क्षेत्रीय निगम पार्षद, अध्यक्ष के रूप में श्री योगेश मुंजाल, संरक्षक, आर्य समाज कैलाश–ग्रेटर कैलाश–1, श्री आनन्द चौहान, निदेशक, अमिटी इण्टरनैशनल स्कूल, श्री विनय आर्य, महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री अजय सहगल, मंत्री, आर्य समाज डिफेन्स कॉलोनी तथा श्री अनिल आर्य, राष्ट्रीय अध्यक्ष, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली कार्यक्रम में उपस्थित हुए।

कार्यक्रम के अन्त में श्री विजय लखनपाल प्रधान ने सब अतिथियों, विद्वानों और सहयोगियों का हार्दिक धन्यवाद किया और प्रीतिभोज में सम्मिलित होने का आमंत्रण दिया। शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।